Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 6 | ISSN : 2581- 6306

समाचार पत्रों का विकास

राजीव कुमार मिश्रा
शोधार्थी, नेहरू ग्राम भारती, मानित विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 4, Issue 6
Page Number : 193-196
Publication Issue :
November-December-2021
Article History
Received : 15 Nov 2021
Published : 30 Nov 2021

शोधसारांश– वरिष्ठ सम्पादक एवं विद्वान अच्युदानन्द मिश्र का कहना है कि पत्रकारिता पूरी तरह व्यवसाय का रुप धारण कर चुकी है। पहले प्रकाशन समाज के प्रति अपना उत्तरदायित्व न सिर्फ समझते थे बल्कि निभाते भी थे। वर्तमान में स्थिति यह है कि प्रकाशन इसे पूरी तरह लाभ–हानि की तर्ज पर निकल रहे हैं। पाठक और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को भी वे नजरअंदाज किये हुए हैं। पिछले एक दशक से पत्रकारिता के क्षेत्र में आयी गिरावट से इसके व्यवसायिक होने की बात पूरी तरह स्पष्ट हो जाती है। पिछले एक दशक से अखबार पाठकों के लिए नहीं, बल्कि विज्ञापनदाताओं के लिए छप रहे हैं। आर्थिक रुप से मजबूत हुए बगैर यह अपने मिशन में कामयाब नहीं हो सकते हैं।

मुख्य शब्द– समाचार, पत्र, विकास, पत्रकारिता, व्यवसाय, धारण, समाज, विज्ञापन, जनसंचार।

जनसंचार माध्यम के विकास से विश्व भर वैचारिक धरात पर एक अद्भुत क्रान्ति का सूत्रपात हुआ। इस माध्यम ने मानवीय जीवन के सभी पहलुओं में अभूतपूर्व परिवर्तन किये। अब तो यह माध्यम सामाजिक बदलाव का एक सशक्त हथियार माना जाता है। सबसे पहले मुद्रण का उद्भव चीन में हुआ। 868 ई. में पहली पुस्तक छपकर संसार के सामने आयी। चीन में मुद्रण के लिए ब्लाक प्रक्रिया का प्रयोग किया गया। यद्यपि ब्लाक प्रक्रिया को यूरोप पहले ही जानता था लेकिन चल टाइप का आरम्भ 15वीं शताब्दी में हुआ जब गुटनबर्ग ने 1430 ई. में इसका आविष्कार किया। भारत में मुद्रण का प्रचलन 6 दिसम्बर 1556 को इसाई धर्म के प्रचार हेतु धर्म प्रचारकों द्वारा किया गया और धार्मिक साहित्य छापने के लिए उन्होंने गोवा में छपाई का एक प्रेस खोला। यद्यपि विश्व में प्रेस स्थापित करने का श्रेय इंग्लैण्ड को है। सबसे पहला समाचार पत्र 'वीकली न्यूज' 1622 ई. में यही से प्रकाशित हुआ। उस समय लन्दन में लगभग एक दर्जन मुद्रक थे। यहीं से समाचार पत्रों के आदान–प्रदान का तारतम्य शुरु हुआ और धीरे–धीरे विदेशी समाचार पत्रों के साथ–साथ स्थानीय समाचार–पत्रों को भी स्थान दिया जाने लगा। लन्दन से विश्व का प्रथम दैनिक समाचार–पत्र 'डेली कमेण्ट कॉज' 1702 ई. में प्रकाशित हुआ।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

भारतवर्ष में प्रथम समाचार पत्र प्रकाशित करने का श्रेय ईस्ट इण्डिया कम्पनी को है, जिसे जेम्स ऑगस्टस हिक्की ने 1780 में इण्डिया गजट के नाम से निकाला था। जिसे बंगाल गजट भी कहा जाता था, लेकिन कुछ समय बाद ही उसका प्रकाशन बन्द करना पड़ा, क्योंकि यह समाचार पत्र ईस्ट इण्डिया कम्पनी के उच्चाधिकारों और न्यायधीशों की करतूतों को उजागर करता था। सितम्बर 1768 में विलियम बोल्ट्स ने एक इश्तहार निकाला। विलियम बोल्ट्स ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अधिकारी थे। वे कम्पनी की अनेक रीतियों के विरोधी भी थे। अपने इश्तहार में उन्होंने लिखा कि ''शहर में छापेखाने के अभाव में आम जनता को सूचित करना भी जरुरी है।'' इस इश्तहार को आधुनिक भारतीय जनसंचार का आदिजनक कहा जाता है। सन् 1830 तक बंगाल में तीन दैनिक समाचार पत्र और तीस अंग्रेजी में प्रकाशित होने वाली पत्रिकाएँ थी। इनमें राजा राममोहन राय की 'समाचार कौमुदी' और 'कलकत्ता जर्नल' शीघ्र ही चर्चित हो गयी। 'अमृत बाजार' पत्रिका तथा 'युगान्तर' की भी पर्याप्त प्रसिद्धि थी। बम्बई से निकलने वाली 'दी बन्देमातरम' 'प्रभाकर', 'सुधाकर', 'केशरी', 'महाराष्ट्र मित्र' का भी देश भर में अपना महत्व था। मद्रास का 'हिन्दू' भी ख्यातिलब्ध समाचार–पत्र था। भारत में मुद्रण के अवरोध का प्रमुख कारण रुढ़िवादी हिन्दू समाज था। इसके बाद जुलाई 1854 में श्याम सुन्दर सेन ने कलकत्ता से समाचार सुधादर्पण का प्रकाशन किया। उस दौरान जिन भी अखबारों ने अंग्रेजी हुकुमत के खिलाफ कोई भी अखबार हुकुमत छपा; तो उसे सकी कीमत चुकानी पड़ी अखबारों को प्रतिबन्धित कर दिया जाता था। उन पर भार भरकम जुर्माना लगाया जाता था, ताकि वे दुबारा फिर उठने की हिम्मत न जुटा पाये। आजादी की लहर जिस तरह पूरे देश में फैल रही थी, अखबार भी अत्याचारों को सहकर और मुखर हो रहे थे। यही वजह थी कि बंगाल विभाजन के उपरान्त हिन्दी पत्रों की आवाज और बुलंद हो गई। लोकमान्य तिलक ने 'केसरी' का संपादन किया और लाला लाजपत राय ने पंजाब से 'वंदेमातरम्' पत्र निकाला। इन पत्रों ने युवाओं को आजादी की लड़ाई में अधिक से अधिक सहयोग देने का आह्वान किया। इन पत्रों ने आजादी पाने का एक जज्बा पैदा कर दिया। 'केसरी' को नागपुर से माधवराव सप्रे ने निकाला लेकिन तिलक के उत्तेजक लेखों के कारण इस पत्र पर पाबंदी लगा दी गई।

'उत्तर भारत में आजादी की जंग में जान फूँकने के लिए गणेश शंकर विद्यार्थी ने 1913 में कानपुर से साप्ताहिक पत्र 'प्रताप' का प्रकाशन आरम्भ किया इसमें देश के हर हिस्से में हो रहे अत्याचारों के बारे में जानकारियाँ प्रकाशित होती थी। इससे लोगों में आक्रोश भड़कने लगा था और वे ब्रिटिश हुकूमत को उखाड़ फेंकने के लिए और भी उत्साहित हो उठे थे। इसकी आक्रामकता को देखते हुए अंग्रेज प्रशासन ने इसके लेखकों, सम्पादकों को तरह–तरह की प्रताड़नाएं दी, लेकिन यह पत्र अपने लक्ष्य पर डटा रहा। इसी प्रकार बंगाल, बिहार, महाराष्ट्र के क्षेत्रों में पत्रों का प्रकाशन होता रहा। उन पत्रों ने

लोगों में स्वतंत्रता को पाने की ललक और जागरुकता फैलाने का प्रयास किया। अगर यह कहा जाए कि स्वतंत्रता सेनानियों के लिए ये अखबार किसी हथियार से कम नहीं थे, तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।'

अखबार बने आजादी का हथियार प्रेस आज जितना स्वतंत्र और मुखर दिखता है, आजादी की जंग में उतना ही बंदिशों और पाबन्दियों से बंधा हुआ था। न तो उसमें मनोरंजन का पुट था और न ही ये किसी की कमाई का जरिया ही। ये अखबार और पत्र–पत्रिकाएँ आजादी के जवाबी का एक हथियार और माध्यम थे जो उन्हें लोगों को जोड़े रखता था। आजादी की लड़ाई का कोई भी ऐसा योद्धा नहीं था, जिसने अखबारों के जरिये अपनी बात कहने का प्रयास न किया हो। गांधी जी ने भी 'हरिजन' यंग इण्डिया के नाम से अखबारों का प्रकाशन किया था तो मौलाना अबुल कलाम आजाद ने 'अल–हिलाल' पत्र का प्रकाशन ऐसे और कितने ही उदाहरण है, जो यह साबित करते हैं कि पत्र–पत्रिकाओं की आजादी लड़ाई में महती भूमिका थी।

यह वह दौर था जब लोगों के पास संवाद का कोई साधन नहीं था। उस पर भी अंग्रेजों के अत्याचारों के शिकार असहाय लोग चुपचाप सारे अत्याचार सहते थे। न तो कोई उसकी सुनने वाला और न तो उनके दुःखों को हरने वाला। वो कहते भी तो किससे और कैसे? हर कोई तो उसी प्रताड़ना को झेल रहे थे। ऐसे में पत्र–पत्रिकाओं की शुरुआत ने लोगों को हिम्मद दी, यही कारण था कि क्रान्तिकारियों के एक–एक लेख जनता में स्फूर्ति और देशभक्ति का संचार करते थे। भारतेन्दु का नाटक भारत–दुर्दशा जब प्रकाशित हुआ था तो लोगों को यह अनुभव हुआ था कि भारत के लोग कैसे दौर से गुजर रहे हैं और अंग्रेजों की मंशा क्या है।

समाचार पत्रों को जानने की स्वाभाविक इच्छा पूर्ति करने के लिए शुरुआती दौर में पुस्तकों के मुद्रण की संख्या काफी कम रही परन्तु बाद में इन्हीं पत्रों ने स्वाधीनता प्राप्ति के आंदोलन में शक्तिशाली अस्त्र–शस्त्रों का काम किया। समाचार–पत्रों ने अन्य देशों का ध्यान भारत के स्वाधीनता आंदोलन की गतिविधियों की वास्तविक भावनाओं से भी परिचित कराया। अगर उस समय जनसंचार के परम्परागत माध्यमों ने गांव–गांव में ग्रामीण लोगों को सचेत किया तो समाचार पत्रों ने शहर के पढ़े–लिखे प्रबुद्ध लोगों में चेतना जागृत कर दी। प्रौद्योगिकी के विकास के साथ–साथ समाचार पत्र पत्रिकाओं में मुद्रण की नई–नई तकनीकों का प्रचलन हुआ है। समाचार–पत्र की छवि को नया रुप देने के लिए साज–सज्जा के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई है। नयी–नयी मशीनों और विभिन्न प्रकार की मुद्रण की प्रक्रियाओं द्वारा पत्रिकाओं को द्रुतगति से छापने की व्यवस्था के साथ–साथ उनकी विषय–वस्तु में भी सुधार हुआ है। आजादी के बाद समाचार–पत्रों के रुप के साथ–साथ उसका उद्देश्य भी बदलते गये।

आजादी से पहले विदेशी राज से निरन्तर संघर्ष करते रहना ही उसका मिशन था। उस समय राष्ट्र–उत्थान, समाज–उत्थान और मानव–उत्थान एकमात्र लक्ष्य था किन्तु आज वह आदर्श लुप्त होता जा रहा है। वैसे पत्रकारिता के समग्र विकास की दृष्टि से उसका व्यवसाय बन जाना उज्ज्वल भविष्य का संकेत भीहै। आज पत्रकारिता के विकास के लिए अपर्याप्त साधन सुलभ है। इसके व्यवसायिक होने की बात का अन्दाजा इसे मिलने वाले विज्ञापन और प्रसार से लगता है। वरिष्ठ सम्पादक एवं विद्वान अच्युदानन्द मिश्र का कहना है कि पत्रकारिता पूरी तरह व्यवसाय का रुप धारण कर चुकी है। पहले प्रकाशन समाज के प्रति अपना उत्तरदायित्व न सिर्फ समझते थे बल्कि निभाते भी थे। वर्तमान में स्थिति यह है कि प्रकाशन इसे पूरी तरह लाभ–हानि की तर्ज पर निकल रहे हैं। पाठक और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को भी वे नजरअंदाज किये हुए हैं। पिछले एक दशक से पत्रकारिता के क्षेत्र में आयी गिरावट से इसके व्यवसायिक होने की बात पूरी तरह स्पष्ट हो जाती है। पिछले एक दशक से अखबार पाठकों के लिए नहीं, बल्कि विज्ञापनदाताओं के लिए छप रहे हैं। आर्थिक रुप से मजबूत हुए बगैर यह अपने मिशन में कामयाब नहीं हो सकते हैं।

संदर्भ

1. श्रीनिवास, एम. एन., इण्डियाज विलेज, एशिया, पब्लिशिंग हाऊस, बम्बई, 1961, पृ. 26.
2. अल्तेकर, ए. एस., प्राचीन भारतीय शासन पद्धतियाँ, भारतीय भण्डार, इलाहाबाद, 1948, पृ. 61
3. हैवले, ई.वी. द्वारा उद्धृत पंचायत राज, सस्ता साहित्य मंडल, नयी दिल्ली, 1965, पृ. 59
4. हैवले, ई.वी. द्वारा उद्धृत पंचायत राज, सस्ता साहित्य मंडल, नयी दिल्ली, 1965, पृ. 63
5. मार्क्स, कार्ल, कैपिटल द्वारा पंचायत राज, पृ. 64
6. ''प्रथम पंचवर्षीय योजना, योजना आयोग'', भारत सरकार, नई दिल्ली, 1952